



[लोगोस बाइबल अध्ययन सेवकाई]

# लोगोस बाइबल प्रतियोगिता मॉड्यूल: 2

वेबसाइट: <https://logosinhindi.com/>

ईमेल: [logosinhindi@gmail.com](mailto:logosinhindi@gmail.com)

फ़ोन: 9772420808

## विषय- सूची

[Chapter 1: आपने परमेश्वर को चुना या उसने आपको?](#)

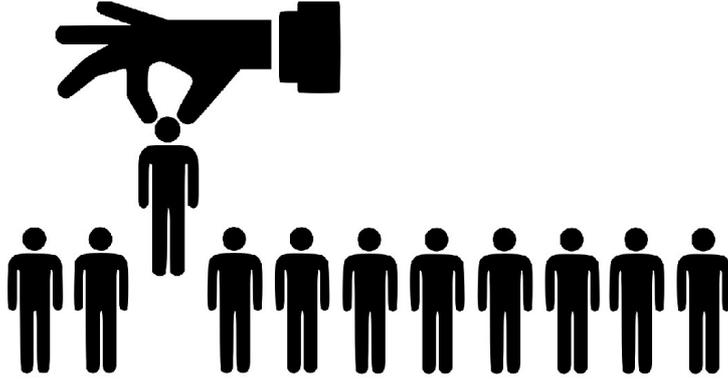
[Chapter 2: विश्वास क्या है?](#)

[Chapter 3: आइये आत्मिक तमीज सीखे](#)

[Chapter 4: प्रश्न: आग का बपतिस्मा क्या है?](#)

[Chapter 5: सम्पूर्ण भ्रष्टता या सम्पूर्ण असमर्थता की शिक्षा/सिद्धांत](#)

## Chapter 1: आपने परमेश्वर को चुना या उसने आपको?



संभवतया मनुष्य की ओर से स्वर्ग के महाराजा और उसके वचन के खिलाफ सबसे ज्यादा उद्धंडता भरा (बत्तमीज़ी भरा) कथन यही होगा की परमेश्वर ने हमें नहीं चुना; बल्कि हमने परमेश्वर को चुना.

आदम की हर संतान प्रभु यीशु मसीह को अस्वीकार करने की इच्छा और सामर्थ रखती है और वो यीशु मसीह को अस्वीकार करेगी, क्योंकि वो पाप में मरी हुई है. मनुष्य के लिए प्रभु यीशु मसीह को अस्वीकार करना उतना ही आसान और स्वाभाविक है जितना कुत्ते के लिए भौंकना.

परन्तु परमेश्वर को चुनने की मनुष्य में ना तो इच्छा है, ना ही सामर्थ. परमेश्वर को चुनने की इच्छा और योग्यता नया जन्म पाने पर आती है. प्रभु यीशु मसीह ने निकुडिमस से कहा:

*" मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता ।" (यहून्ना 3:3)*

आप सही बोल रहे हैं यहून्ना 3:16 तो कहता है की हर कोई जो विश्वास करेगा, उद्धार पायेगा. परन्तु क्या आपने कभी सोचा की कौन विश्वास करेगा? यहाँ देखिये:

*परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लोह से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं। (यहून्ना 1:12-13)*

क्या आपने ये आयतें पढ़ी? कुछ लोगों ने क्यों विश्वास किया? क्योंकि वो ना तो लहू से, ना शरीर से, ना मनुष्य की इच्छा से उत्पन्न हुए. उन्होंने विश्वास किया क्योंकि वो परमेश्वर के द्वारा स्वर्ग से जन्माये गए थे. उद्धार के लिए नया जन्म पाना आवश्यक है.

मेरा अब आप से यह प्रश्न है : , “आपको पैदा करने के लिए क्या आपके माता-पिता ने आप से अनुमति ली थी?” जब आपके शारीरिक जन्म में आपकी कोई स्वेच्छा और योगदान नहीं था, तो आप हिम्मत भी कैसे कर सकते हैं ये कहने की कि आत्मिक जीवन परमेश्वर ने आपको आपकी स्वेच्छा से दिया है?

अगर आज आप वास्तव में यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं यह इस कारण है कि परमेश्वर ने आपको ऊपर से नया जन्म दिया. निम्नांकित आयतों को आप धीरे-धीरे, बार-बार और जोर-जोर से तब तक पढ़िए, जब तक आप इनके मर्म को ना समझ जाएँ:

*और केवल यही नहीं, परन्तु जब रिबका भी एक से अर्थात् हमारे पिता इसहाक से गर्भवती थी।और अ भी तक न तो बालक जन्मे थे, और न उन्होंने कुछ भला या बुरा किया था कि उस ने कहा, कि जेठा छु टके का दास होगा। इसलिये कि परमेश्वर की मनसा जो उसके चुन लेने के अनुसार है, कर्मों के कारण नहीं, परन्तु बुलाने वाले के कारण है, बनी रहे।जैसा लिखा है, कि मैं ने याकूब से प्रेम किया, परन्तु ए सौ को अप्रिय जाना॥*

(रोमियों 9:10-12)

झूठे शिक्षक कितना भी प्रयास क्यों ना कर ले, वो रोमियों कि इन आयतों से कभी भी ये नहीं कहलवा सकते कि उद्धार में आपका योगदान है. परमेश्वर ने याकूब को पैदा होने से पहले ही अपना घोषित कर दिया था.

## प्रभु यीशु मसीह ने क्या कहा?

*तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है. (यहुन्ना 15:16)*

बाइबल में सैंकड़ों आयतें हैं जो कहती है कि मनुष्य का उद्धार में कोई योगदान नहीं, परन्तु संभवतया यहुन्ना 15:16 सबसे ज्यादा स्पष्ट है. मनुष्य कितना मूर्ख होता है कि इस आयत को पढ़ने के बाद भी कहता है कि मेने अपनी स्वेच्छा से यीशु मसीह को चुना है और स्वीकार किया है! प्रभु यीशु मसीह ने जब कहा “तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है.”, तो उसने कोई गुंजाइश ही नहीं छोड़ी कि मनुष्य कह सके कि उद्धार में उसका कोई योगदान है, फिर भी खुद कि आराधना करने वाला अहमी और घमंडी मनुष्य ये कहता है, “यीशु मसीह ने मेरे उद्धार के काम में अपने हिस्से का काम किया और मेने अपने हिस्से का.”

यह परमेश्वर के संप्रभु होने और भाग्य विधाता होने के गुणों को हड़पने कि वैसी ही कोशिश है जैसी लूसिफर और आदम ने की थी. यह दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे दुष्ट पाप है- अर्थात् परमेश्वर के नहीं दिए जा सकने वाले गुणों (incommunicable attributes) को पाने कि कोशिश. याद रखिये

उनका हर पाप क्षमा है, जो ये विश्वास करते हैं: “यीशु मसीह ही ने हमें सृष्टि कि उत्पत्ति से पहले चुन लिया था, उसने हमें चुने हुए के लिए कीमत चुकाई और एक दिन मुझे अपने पास बुला लिया, मुझे बदल दिया, मेरा इस में कोई योगदान नहीं. आज मैं उससे प्यार करता हूँ क्योंकि उसने आप ही मुझे आत्मिक रूप से ज़िंदा किया और अनुग्रह के द्वारा बचा लिया. मेरा उद्धार मेरी स्वेच्छा के द्वारा नहीं पर परमेश्वर के स्वतंत्र अनुग्रह के कारण हुआ.” लेकिन जो ये बोले कि परमेश्वर ने मेरी अनुमति से मुझे बचाया, मेने यीशु मसीह को अपनी स्वतंत्र इच्छा के द्वारा चुना, यीशु मसीह ने अपना काम किया, मेने अपना, ऐसे लोग ऐसी स्थिति में मर जाये तो उनका पाप अक्षम्य है, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में किसी को घमंड का मौका नहीं दे सकता:

*क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। (इफिसियों 2:8-9)*



निम्नलिखित आयतों को भी देखिये:

*उसने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया. (याकूब 1:18)*

देखिये याकूब 1:18 स्पष्ट है आपका उद्धार आपकी स्वतंत्र इच्छा के द्वारा नहीं परमेश्वर कि स्वतंत्र इच्छा के द्वारा हुआ.

*क्योंकि वह मूसा से कहता है, मैं जिस किसी पर दया करना चाहूँ, उस पर दया करूँगा, और जिस किसी पर कृपा करना चाहूँ उसी पर कृपा करूँगा। सो यह न तो चाहने वाले की, न दौड़ने वाले की परन्तु दया करने वाले परमेश्वर की बात है। (रोमियों 9:25-26)*

क्या इससे भी ज्यादा सबूत चाहिए आपको इस बात के कि आपकी स्वतंत्र इच्छा के द्वारा नहीं पर परमेश्वर के स्वतंत्र अनुग्रह के द्वारा आपका उद्धार हुआ है? अगर हाँ तो आप अंधे हैं और किसी और ही आत्मा कि अगुवाई में चल रहे हैं.

## फिर उद्धार कैसे होता है?

हम निम्नलिखित बिंदुओं के द्वारा इसको समझेंगे:

- हम पापों में मरे हुए थे और परमेश्वर के पास आने कि इच्छा और सामर्थ नहीं रखते थे.

*कोई समझदार नहीं, कोई परमेश्वर का खोजने वाला नहीं। (रोमियों 3:11)*

*तुम अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे। (इफिसियों 2:1)*

*परन्तु शारीरिक (पापों में मरा हुआ) मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें समझ सकता है क्योंकि वो तो आत्मिक रीति से (पवित्र आत्मा के द्वारा) समझी जाती है। (पहला कुरिन्थियों 2:14)*

*क्योंकि शरीर पर मन लगाना (ये पाप में मरे हुए व्यक्ति की बात हो रही है) तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है। और जो शारीरिक दशा में है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते (इसके लिए आत्मिक रूप से नया जन्म पाना आवश्यक है— यहून्ना 3:3)। (रोमियों 8:7-8)*

- परमेश्वर ने खुद ने हमें आत्मिक रूप से नया जन्म दिया.

*जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।*

*और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार (आपकी स्वतंत्र इच्छा के द्वारा नहीं) हमें अपने लिये पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों,*

*कि उसके उस अनुग्रह की महिमा (आपकी स्वतंत्र इच्छा की नहीं) की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस प्यारे में संत में दिया। (इफिसियों 1:4-6)*

- नए जन्म में परमेश्वर ने हमें नया स्वाभाव, नई इच्छा (परमेश्वर से प्यार करने की), नए स्नेह (परमेश्वर की बातों के लिए), नई प्रवृत्ति (पवित्रता की ओर), विश्वास (परमेश्वर में) और पश्चाताप (पापों से) का दान दिया.

नया जन्म पाने के द्वारा हमने यीशु मसीह पर विश्वास किया. याद रखिये विश्वास ओर पश्चाताप आपकी ओर से परमेश्वर को दी गई भेंट नहीं है; ये परमेश्वर की ओर से आपको दिए गए दान है.

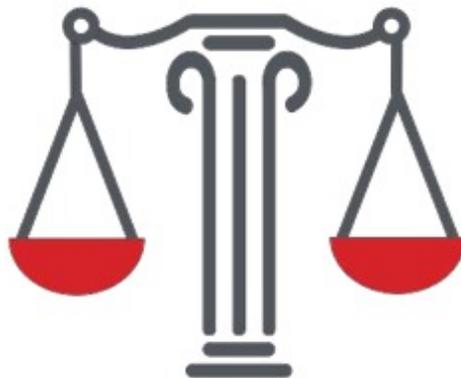
*जितने अनन्त जीवन के लिये ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया। (प्रेरितों 13:48),*

*परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है। (प्रेरितों 11:18)*

*क्योंकि तुझ में और दूसरे में क्या अंतर है? और तेरे पास क्या है जो तू ने (ऊपर से अर्थात् परमेश्वर से) नहीं पाया: और जब कि तू ने (ऊपर से अर्थात् परमेश्वर से) पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है, कि मानों नहीं पाया? (पहला कुरिन्थियों 4:7).*

हाँ आपने विश्वास किया, परन्तु यह इस लिए नहीं की आप विश्वास नहीं करने वाले अपने पड़ोसी से ज्यादा बुद्धिमान या धर्मी हैं, लेकिन इसलिए क्योंकि आपको परमेश्वर ने विश्वास का दान दिया है.

## **उपसंहार:**



यह समझिये. परमेश्वर किसी का कर्जदार नहीं है. यदि वो सबको नरक भेज दे, तो भी वो धर्मी ओर न्यायी ही रहेगा, क्योंकि हम अपने पापों के लिए जिम्मेदार हैं ओर नरक के ही योग्य हैं. परमेश्वर ने कुछ लोगों को चुन लिया ओर बाकी को छोड़ दिया.

जो स्वर्ग जाते हैं उनको अनुग्रह मिला (जिसके वो योग्य ना थे).

जो नरक जाते हैं उनको न्याय मिला (जिसके वो योग्य थे)

किसी को भी अन्याय नहीं मिला.

## Chapter 2: विश्वास क्या है?



1. वो जो मेरे में से निकलता है विश्वास नहीं है। वो जो वचन को सुनने के द्वारा परमेश्वर की ओर से मुझे दान स्वरूप मिलता है, वो विश्वास है।
2. विश्वास मेरी ओर से परमेश्वर को उपहार नहीं है। विश्वास परमेश्वर की ओर से मुझे दान है।
3. मैं जो चाहता हूँ ( बीमारी से चंगाई, नौकरी, शादी, धन आदि) वो मुझे मिलेगा, ये विश्वास नहीं है। विश्वास ये है:

परमेश्वर सर्वसामर्थी है और वो जो मुझे चाहिए वो देने में समर्थ है।

परमेश्वर दयालु और अनुग्रहकारी है और वह अपने बच्चों की प्रार्थना सुनने में और उनका उत्तर देने में आनंदित होता है।

वो हमारी प्रार्थना का उत्तर देगा यदि वो उसकी सम्प्रभु (sovereign) योजना में होगा तो।

वो हमारी प्रार्थना का सकारात्मक उत्तर देगा यदि वो इसके द्वारा महिमा पाना चाहता है तो और यदि मैं जो मांग रहा हूँ वो उसकी अनंत बुद्धी के अनुसार मेरी भलाई के लिए है तो।

4. ये कहना या विश्वास करना विश्वास नहीं है कि जो हमने प्रार्थना में मांगा वो हमें मिल गया।

ऐसा कहना गुस्ताखी (presumptuousness) है और झूठ भी। ये कहना या विश्वास करना विश्वास है कि परमेश्वर ने चाहा तो ये मुझे मिल जाएगा।

5. जो चीज़े अस्तित्व में नहीं उनकी ऐसे घोषणा करना जैसे वो अस्तित्व में है विश्वास नहीं है। वो तो गुस्ताखी (presumptuousness) है और झूठ भी।

परमेश्वर जो चीज़े अस्तित्व में नहीं उनकी ऐसे घोषणा करता है जैसे वो अस्तित्व में है क्योंकि वो परमेश्वर है, वो अनंत में है, वो भविष्य को सिर्फ जानता ही नहीं है उसने भविष्य को निर्धारित किया है।

क्या आप परमेश्वर हैं। क्या आप अनंत में हैं? क्या आप भविष्य को जानते हैं? क्या आप में अपने शब्दों या प्रार्थनाओं के द्वारा भविष्य को बदलने की सामर्थ्य है? क्या आप अपने भाग्य के खुद विधाता हो? नहीं ना तो कभी जो चीज़ें अस्तित्व में नहीं उनको ऐसे ना बोले जैसे वो अस्तित्व में हैं.

ये कहना और विश्वास करना विश्वास है कि मेरा काम परमेश्वर से प्रार्थना करना है जो जो परमेश्वर चाहे मुझे दे और जो ना देना चाहे ना दे, मैं उससे ज्यादा बुद्धिमान नहीं हूँ।

**6.** विश्वास ये नहीं कि मैं जो शब्द अंगीकार करूँगा या बोलूँगा वो मेरे जीवन में हो जाएगा या अस्तित्व में आ जायेगा।

विश्वास ये है कि परमेश्वर ने जो कहा है और जो कहेगा वो मेरे लिए हो जाएगा या अस्तित्व में आ जायेगा।

परमेश्वर जो बोलता है या आज्ञा देता है वो हो जाता है, क्योंकि वो परमेश्वर है, वो सृजनहार है, भाग्यविधाता है।

क्या आप परमेश्वर हैं? क्या आप के शब्दों में सृजनात्मक या भविष्य निर्धारण करने की क्षमता है? नहीं ना? फिर?

परमेश्वर आपको इस लेख के द्वारा आशीष दे।

## Chapter 3: आइये आत्मिक तमीज सींखे



बातें करने में उतावली न करना, और न अपने मन से कोई बात उतावली से परमेश्वर के सामने निकालना, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में हैं और तू पृथ्वी पर है, इसलिये तेरे वचन थोड़े ही हों॥  
(सभोपदेशक 5:2)

तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा (निर्गमन 20:7)

उपर्युक्त आयत में परमेश्वर चेताता है की हमे उसके सामने और उसके बारे में सोच समझ कर बोलना चाहिए. क्या हम अपने बड़ो से और उनके बारे में बिना सोच समझ कर बोल सकते हैं ? नहीं, हमारे शब्द सम्मानजनक होने चाहिए. क्या हम अपने शिक्षक, पासवान, से कुछ भी बिना सोचे समझे बोल सकते हैं? स्पष्ट रूप से नहीं. क्या हम हमारे जिला कलेक्टर, मुख्यमंत्री, या प्रधानमंत्री से बदतमीजी से बोल सकते हैं? नहीं. जितना बड़ा व्यक्ति का ओहदा होता है हम उतने ही भय और समझ के साथ बोलते है. तो हमे परमेश्वर के सामने और उसके बारे में कितना भय, और समझ के साथ बोलना चाहिए! आइये में आपको बताता हूँ कि किन किन स्थानों पर हमे अपनी शब्दावली को सम्मानजनक बनाना है.

1. हमने अक्सर पासवानों को बोलते सुना होगा की यीशु मसीह को अपना प्रभु बना लीजिये या विश्वासियों को बोलते देखा होगा की मैंने यीशु मसीह को इस इस साल में अपना प्रभु बना लिया. ये ईशनिंदापूर्ण (परमेश्वर का तिरस्कार करने वाले) शब्द हैं. हम यीशु मसीह को प्रभु नहीं बनाते . वो तो अनादिकाल से अनंतकाल तक प्रभु या मालिक है. वो तो इस ब्रह्माण्ड का सृष्टिकर्ता, इसको चलाने वाला और इस पर राज करने वाला संप्रभु महाराजा है- सर्वसत्ताधिकारी है. क्या जिसकी वजह से मनुष्यों के लिए अनगिनत और पृथ्वी से कई कई गुना बड़े तारे अपनी जगह पर स्थिर है, गृह उपग्रह अपनी अपनी धूरी पर घूम रहे हैं, रात और दिन होते हैं , ऋतुएं बदलती हैं, महासागरों का जल ठहरा हुआ है ,

जिसकी सेवा और आराधना अनगिनत स्वर्गदूत करते हैं, जिसके नाम से शतान और उसका साम्राज्य काँपता है, जिसने हमें अपनी माता के गर्भ में सिर्फ़ हैं और इतना बड़ा किया है, जो हमें दया करके श्वाश देता है, क्या हम उसकी अपना प्रभु बनाये. नहीं वो तो सदा से इस समस्त सृष्टि पर प्रभु है.

तो फिर सही शब्द क्या हैं ? प्रभु यीशु मसीह की प्रभुता के सामने समर्पण कर दीजिये.

2 . आपने पासवानों को कहते सुना होगा की प्रभु यीशु मसीह को स्वीकार कर लो या विश्वासियों को कहते सुना होगा कि मेने इस इस वर्ष में यीशु मसीह को स्वीकार किया. हमने यीशु मसीह को स्वीकार किया या यीशु मसीह ने हमें. भिकारी हम हैं या यीशु मसीह ? जरूरतमंद हम हैं या यीशु मसीह ? महाराजा हम हैं या प्रभु यीशु मसीह ? विद्रोह करके परमेश्वर से हम अलग हुए थे या उसने विद्रोह किया था की वो लौट कर आये और हम उसको स्वीकार करें . बाइबिल में तो कही भी इन शब्दों का प्रयोग नहीं किया गया. फिर हम क्यों करते हैं.

यदि आपको **यूहन्ना 1:12** याद आ रहा है जिसमें ग्रहण करना शब्द इस्तेमाल किया गया है , तो ध्यान रहे ग्रहण करने से क्या तात्पर्य है ये उसी आयत में लिखा है-

*परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। (यूहन्ना 1:12)*

जितनों ने उसे ग्रहण किया अर्थात् उसके नाम पर विश्वास किया. समझे आप. ग्रहण करना और विश्वास करने का अर्थ एक सामान है. इन दोनों शब्दों का अर्थ है प्रभु यीशु मसीह पर एक मात्र उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में समर्पण करना है. याद रखिये हमने उससे विद्रोह किया है तो अब समर्पण ही करेंगे ना ? या स्वीकार?

अब शायद आप कहेंगे की प्रकाशितवाक्य में तो लिखा है कि यीशु हमारे दिल के दरवाजे पर खटखटा रहा है और हमें दरवाजा खोल के उसको अंदर बुलाना है- अर्थात् उसे अपने दिल में स्वीकार करना है. जरा रुकिए. आप जिस आयत की बात कर रहे हैं वो प्रकाशितवाक्य 3 की बीसवी आयत है:

*देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुन कर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आ कर उसके साथ भोजन करूँगा, और वह मेरे साथ। (प्रकाशितवाक्य 3:20)*

पहली बात तो इस आयत में कहीं भी दिल शब्द नहीं है. फिर आपने कहाँ से सुना ये कि दिल के द्वार खटखटा रहा है. मैं बताता हूँ. कुछ प्रचारकों ने इस आयत को रूमनिकारित (रोमांटिसिज़े) कर दिया अविश्वासियों को लुभाने के लिए. यहाँ तक की गिडोन्स इंटरनेशनल द्वारा वितरण के लिए छपी बाइबल के अंत में भी इस इस आयत को सन्दर्भ से बाहर दे दिया है.

अब मैं आपको बता दूँ की ये आयत सुसमाचार प्रचार के वक्त नहीं प्रयोग की जा सकती. क्योंकि ये एक नामधारी या झूठी कलीसिया को लिखी गई है. आप प्रकाशितवाक्य अध्याय ३ को पूरा पढ़ेंगे तो इस बात को जान पाएंगे. इन शब्दों का प्रयोग यहाँ इस लिए किया गया है क्योंकि लाओदिसिया की ये कलीसिया मसीही कहलाती तो थी लेकिन मसीह इनमें नहीं था; इनके बाहर था. मसीह यहाँ सिर्फ़

चित्रात्मक और मानवरूपक भाषा का उपयोग कर रहा है -उसका कहने का मतलब है की मैं तुममे नहीं रहता; यदि तुम दरवाजा खोलो अर्थात पश्चाताप करो तो मैं अंदर आ जाऊंगा अर्थात तुम्हारी जीवन और कलीसिया में आ जाऊंगा और हम साथ में भोजन करेंगे अर्थात हमारा घनिष्ट सम्बन्ध होगा. वार्ना सोचिये यीशु मसीह जो खुद दरवाजा है (यूहन्ना 10:7) और मार्ग (यूहन्ना 14:6) , वो क्यों कही पर खटखटाएगा. यदि आप फिर भी कहे की वो तो अपनी भेड़ों को ढूंढने आया तो हाँ आप सही बोल रहे है. इसका मतलब ये नहीं की ज़रूरत मंद की तरह कही पर इंतज़ार करेगा. भेड़ों वाली पूरी आयत को पढ़ते है:

*मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं। (यूहन्ना 10:27)*

जितने उसके चुने हुए लोग है उतने उसके पीछे हो लेते है.

3. कुछ प्रचारक ऐसे बोलते है की यीशु को चुन लो आज निर्णय ले लो. उद्धार आपके चुनाव के द्वारा नहीं होता. उद्धार परमेश्वर के चुनाव के द्वारा होता है. निम्नांकित आयतों को देखिये:

*तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है. (यूहन्ना 15:16)*

*जितने अनन्त जीवन के लिये ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया। (प्रेरितों के काम 13:48)*

*कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिस ने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले; (यूहन्ना 6:44)*

*“क्योंकि वह मूसा से कहता है, मैं जिस किसी पर दया करना चाहूँ, उस पर दया करूँगा, और जिस किसी पर कृपा करना चाहूँ उसी पर कृपा करूँगा।*

*सो यह न तो चाहने वाले की, न दौड़ने वाले की परन्तु दया करने वाले परमेश्वर की बात है।” (रोमियों 9:15-16)*

निर्णय कर लो, परमेश्वर को चुन लो शब्द धर्मशास्त्र के अनुसार कितने त्रुटिपूर्ण और तिरस्कारजनक है! परमेश्वर ने हमे सृष्टि के निरमान के पहले चुन लिया था. उद्धार न तो चाहने वाले की बात है ना दौड़ने वाले की बल्कि दया करने वाले की. जी हाँ जिनको उसने चुना है वो ही आयेगा.

तो फिर कोनसे शब्दों में प्रचार किया जाये. उन्ही में जिन में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने, यीशु मसीह ने, और प्रेरितों ने किया. सुसमाचार सुनाने के बाद उन्हें विश्वास करने और पश्चाताप करने को कहे जिसका अर्थ है पापी को यीशु के सामने उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में समर्पण करना होगा.

4. आपने यह भी सुना होगा की यीशु को अपना दिल देदो . प्रचारकों ने सुसमाचार के रोमनीकरण कर दिया. सज्जनो जागिये, ये यीशु मसीह के महिमावान सुसमाचार है; बॉलीवुड या हॉलीवुड नहीं.

हम जान ले की. कोई भी व्यक्ति कभी भी अपना दिल परमेश्वर को देने के द्वारा उद्धार नहीं पाया. हम अपने कुछ देने के द्वारा नहीं बचाये जाते है परन्तु परमेश्वर के देने के द्वारा बचाये जाते है. – ऐ. डबल्यू. पिक . इसको निम्नांकित आयतों में भी देखिये:

*“यह सुनकर, चेलों ने बहुत चकित होकर कहा, फिर किस का उद्धार हो सकता है?”*

यीशु ने उन की ओर देखकर कहा, मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है। ” (मती 19:25-26)

(इफिसियों 2:8-9)

“ क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है।

और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।”

और आपको यह भी बता दूँ की विश्वास और पश्चात्ताप परमेश्वर की ओर से आपको दान है. विश्वास के स्रोत आप नहीं है ये परमेश्वर की ओर से आप को दान है . परमेश्वर के एक दास ने इसको इस तरह से कहा है:

विश्वास पापी को परमेश्वर की ओर से दान है ना की पापी की ओर से परमेश्वर को.- डेविड एन. स्टील

**इफिसियों 2:8** को पढ़ेंगे तो भी यह स्पष्ट हो जायेगा की विश्वास परमेश्वर की ओर से दान है . इसके अलावा निम्नांकित आयतो को भी देखिये:

और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; (इब्रानियों 2:12)

इसी तरह से पश्चात्ताप भी परमेश्वर की ओर से दान है (प्रेरितों के काम 5:31, 11:18, 2 तिमथियस 2:25).

5. आपने कई लोगों को प्राथना में शैतान, बिमारियों , आदि को डाटते हुए और आज्ञा देते हुए देखा होगा. आप पहले ये निर्णय कर ले की आप प्रार्थना कर रहे है या आज्ञा दे रहे है? ये दोनों बिलकुल अलग अलग है . इनमे जमीं आसमान के अंतर है. इनका मिलान संभव ही नहीं है. प्राथना मांगना है और आदेश देने मे अधिकार और प्रभुत्व आता है . आपने आज्ञा देकर आज तक कितने लोगों के कैंसर, एड्स ,और अन्य लाइलाज बिमारियों को चंगा किया है ? आदेश देकर कितने अंधों को दृष्टि दी है ? कितने बहरो को श्रवण शक्ति दी है . कितनी दुष्टात्माओं को आज्ञा दी और वो एक ही आदेश पर निकल गई. आप ईमानदार है , दुष्टात्माओं के चलावे में नहीं हे और अपने दिल की दुष्टता में नहीं आ रहे है तो आप कहेंगे एक भी चंगाई आप की आज्ञा से नहीं हुई . क्या आपने कभी सोचा है की आप के आज्ञा देने से ऐसा क्यों नहीं हो रहा है? क्योंकि वो प्रेरितों और उनके कुछ नजदीकी कार्यकर्ताओं को दिया गया विशेष दान था और उसका उद्देश्य था जब तक की नया नियम पूरा नहीं हो जाये तब तक प्रेरितों के परमेश्वर से मिले प्रकाशनो को दृढ़ करे या उनका सबूत दे.

ये आपके लिए नहीं था. बस आप आज तक कुछ आयतों को सन्दर्भ के बहार लेके करने की कोशिश कर रहे थे. मैं किसी और लेख में आपको ये सब और भी विस्तृत रूप में और सबूत दे दे कर बताऊंगा अब मेरा प्रश्न हे जब भी आपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से किसी बीमारी को या दुष्टात्मा को डाटा और तुरंत चंगाई नहीं मिली तो क्या आपने यीशु के नाम व्यर्थ नहीं लिया? आपने आज्ञा दी सब नामों से ऊंचे नाम यीशु मसीह के नाम से और बीमारी ने नहीं मिटी , क्या ये यीशु मसीह का अपमान नहीं? तो

अब मेरा आप से अनुरोध हे आप प्रार्थना करे, विनती करे , दया की भीख मांगे , लेकिन आज्ञा ना दे. प्रार्थना में शैतान से बात न करे और उसे ना डांटे. ये पढ़िए:

**(यहूदा 8,9)**

*“8 उसी रीति से ये स्वप्नदर्शी भी अपने अपने शरीर को अशुद्ध करते, और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं; और ऊंचे पद वालों को बुरा भला कहते हैं।*

*9 परन्तु प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल ने, जब शैतान से मूसा की लोथ के विषय में वाद-विवाद करता था, तो उस को बुरा भला कहके दोष लगाने का साहस न किया; पर यह कहा, कि प्रभु तुझे डांटे।”*

यदि सन्दर्भ देखे तो आयत 8 में ऊंचे पद वाले से लेखक के तात्पर्य है स्वर्गदूत चाहे वे गिरे हुए या पवित्र हों. इसके अनुसार हम शैतान और दुष्टात्मा को नहीं डाट सकते .. स्वयं मीकाएल ने भी शैतान को डाटने की हिम्मत नहीं की. उसने कहा प्रभु तुम्हे दाते.

## Chatper 4: प्रश्न: आग का बपतिस्मा क्या है?

उत्तर: अक्सर लोग **मत्ती 3:11** का प्रयोग करके आग के बपतिस्मे के बारे में प्रचार करते हैं. आपने लोगों को परमेश्वर से आग का बपतिस्मा मांगते हुए भी देखा होगा. कृपया निम्नलिखित पदों को ध्यान से ज़ोर ज़ोर से 2-3 बार पढ़ें और सन्दर्भ के हिसाब से अर्थ निकालें:

*“आयत 11 में तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उस की जूती उठाने के योग्य नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।*

**आयत 12** उसका सूप उस के हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूँ को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।” (**मत्ती 3:11-12**)



ग्यारहवीं आयत में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहता है की उसके बाद आने वाला अर्थात् यीशु मसीह पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा. लोग यह सोचते हैं की पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और आग का बपतिस्मा एक ही है . लेकिन हम संदार्भ को समझने के लिए आयत 12 समझेंगे. उसमें यूहन्ना कहता है की यीशु मसीह का सूप उसके हाथ में है और वो अपना खलिहान अच्छे से साफ़ करेगा. गेहूँ को तो वो खत्ते में इकट्ठा करेगा और भूसी को कभी ना बुझने वाली आग में जलाएगा. गेहूँ विश्वासी का प्रतीक है और भूसी अविश्वासियों का. इस सन्दर्भ के अनुसार विश्वासियों को तो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलेगा और अविश्वासियों को नरक का.

जी हाँ, आग का बपतिस्मा मांगना प्रभु से यह कहना है की मुझे नरक में डाल दे जहाँ की आग बुझने की नहीं. कितनी भयावह प्रार्थना है !!!! कभी भी किसी भी आयत का मतलब बिना सन्दर्भ के ना निकालें.

## Chapter 5:(Doctrine of Total Depravity) सम्पूर्ण भ्रष्टता या सम्पूर्ण असमर्थता की शिक्षा/सिद्धांत



मनुष्य पूरी तरह भ्रष्ट या पापों में मारा हुआ है. वह परमेश्वर को नहीं चुन सकता, ना ही वह परमेश्वर के पास आना चाहता है. उसके महान से महान कार्य परमेश्वर की नज़रों में पाप है क्योंकि जो विश्वास से नहीं और परमेश्वर की महिमा के लिए नहीं, वो सब पाप है.

मनुष्य जन्म से ही पाप में मारा हुआ है और वो अपने को नहीं बदल सकता; ना ही बदलना चाहता है. वह जान बूझ कर स्वेच्छा से परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह कर रहा है. इस शिक्षा या सिद्धांत को हम बाइबल की हर किताब में बहुतायात और स्पष्टता के साथ देख सकते हैं. उनमे से कुछ साक्षी आयतें (prooftexts) हम नीचे दे रहे हैं. इस शिक्षा या सिद्धांत को हम बाइबल की हर किताब में बहुतायात और स्पष्टता के साथ देख सकते हैं. उनमे से कुछ साक्षी आयतें (prooftexts) हम नीचे दे रहे हैं.

### **Original sin:**

Gen. 2:17

“For in the day that thou eatest thereof thou shalt surely die” .

17. पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा॥

Romans 5:12:

“Wherefore, as by one man sin entered into the world, and death by sin; and so death passed upon all men, for that all have sinned.”

12 इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया।

### Genesis 5:3

And Adam lived an hundred and thirty years, and begat a son in his own likeness, after his image; and called his name Seth.

3. जब आदम एक सौ तीस वर्ष का हुआ, तब उसके द्वारा उसकी समानता में उस ही के स्वरूप के अनुसार एक पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम शेत रखा।

### Job 14:4

Who can bring a clean thing out of an unclean? not one.

4. अशुद्ध वस्तु से शुद्ध वस्तु को कौन निकाल सकता है? कोई नहीं।

### Psalm 51:5

Behold I was shapen in iniquity; and in sin did my mother conceive me.

5. देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा।

### Psalm 58:3

The wicked are estranged from the womb: they go astray as soon as they be born, speaking lies.

3. दुष्ट लोग जन्मते ही पराए हो जाते हैं, वे पेट से निकलते ही झूठ बोलते हुए भटक जाते हैं।

### Eph. 2:1

“And you hath he quickened, who were dead in trespasses and sins”

और उस ने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।



jeremiah 17:9

**“The heart is more deceitful than all else And is desperately sick; Who can understand it?”**

9. मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है?

Genesis 6:5

And God saw that the wickedness of man was great in the earth, and that every imagination of the thoughts of his heart was only evil continually.

5. और यहोवा ने देखा, कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है।

Genesis 8:21

And the Lord smelled a sweet savour; and the Lord said in his heart, I will not again curse the ground any more for man's sake; for the imagination of man's heart is evil from his youth; neither will I again smite any more every thing living, as I have done.

21. इस पर यहोवा ने सुखदायक सुगन्ध पाकर सोचा, कि मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न दूंगा, यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है सो बुरा ही होता है; तौभी जैसा मैं ने सब जीवों को अब मारा है, वैसा उन को फिर कभी न मारूंगा।

Job 15:14-16

What is man, that he should be clean? and he which is born of a woman, that he should be righteous? Behold, he putteth no trust in his saints; yea, the heavens are not clean in his sight. How much more abominable and filthy is man, which drinketh iniquity as water.

14. मनुष्य है क्या कि वह निष्कलंक हो? और जो स्त्री से उत्पन्न हुआ वह है क्या कि निर्दोष हो सके? 15. देख, वह अपने पवित्रों पर भी विश्वास नहीं करता, और स्वर्ग भी उसकी दृष्टि में निर्मल नहीं है। 16. फिर मनुष्य अधिक घिनौना और मलीन है जो कुटिलता को पानी की नाई पीता है।

Psalms 14:1-3

The fool hath said in his heart, There is no God. They are corrupt, they have done abominable works, there is none that doeth good. The Lord looked down from heaven upon the children of men, to see if there were any that did understand, and seek God. They are all gone aside, they are all together become filthy: there is none that doeth good, no, not one.

मूर्ख ने अपने मन में कहा है, कोई परमेश्वर है ही नहीं। वे बिगड़ गए, उन्होंने घिनौने काम किए हैं, कोई सुकर्मी नहीं। परमेश्वर ने स्वर्ग में से मनुष्यों पर दृष्टि की है, कि देखे कि कोई बुद्धिमान, कोई परमेश्वर का खोजी है या नहीं। वे सब के सब भटक गए, वे सब भ्रष्ट हो गए; कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं।

Jeremiah 4:22

For my people is foolish, they have not know me; they are sottish children, and they have no understanding: they are wise to do evil, but to do good they have no knowledge.

22. क्योंकि मेरी प्रजा मूढ़ है, वे मुझे नहीं जानते; वे ऐसे मूर्ख लड़के हैं जिन में कुछ भी समझ नहीं। बुराई करने को तो वे बुद्धिमान हैं, परन्तु भलाई करना वे नहीं जानते।

Jeremiah 13:23

Can the Ethiopian change his skin, or the leopard his spots? Then may ye also do good, that are accustomed to evil.

23. क्या हबशी अपना चमड़ा, वा चीता अपने धब्बे बदल सकता है? यदि वे ऐसा कर सकें, तो तू भी, जो बुराई करना सीख गई है, भलाई कर सकेगी।

John 6:44

No man can come to me, except the Father which hath sent me draw him: and I will raise him up at the last day.

44. कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिस ने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले; और मैं उस को अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा।



Romans 3:9-19

What then? are we better than they? No, in no wise: for we have before proved both Jews and Gentiles that they are all under sin; as it is written, There is none righteous, no, not one: there is none that understandeth, there is none that seeketh after God. They are all gone out of the way, they are all together become unprofitable; there is

none that doeth good, no, not one. Their throat is an open sepulchre; with their tongues they have used deceit; the poison of asps is under their lips: whose mouth is full of cursing and bitterness: their feet are swift to shed blood: destruction and misery are in their ways: and the way of peace they have not known: there is no fear of God before their eyes. Now we know that what things soever the law saith, it saith to them who are under the law: that every mouth may be stopped, and all the world may become guilty before God.

9.तो फिर क्या हुआ? क्या हम उन से अच्छे हैं? कभी नहीं; क्योंकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर यह दोष लगा चुके हैं कि वे सब के सब पाप के वश में हैं।10.जैसा लिखा है, कि कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं।11.कोई समझदार नहीं, कोई परमेश्वर का खोजने वाला नहीं।12.सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए, कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं। 13.उन का गला खुली हुई कब्र है: उन्होंने अपनी जीभों से छल किया है: उन के होठों में सापों का विष है. 14.और उन का मुंह श्राप और कड़वाहट से भरा है।15.उन के पांव लोहू बहाने को फुर्तीले हैं।16.उन के मार्गों में नाश और क्लेश हैं।17.उन्होंने कुशल का मार्ग नहीं जाना।18.उन की आंखों के साम्हने परमेश्वर का भय नहीं।19.हम जानते हैं, कि व्यवस्था जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था के आधीन हैं: इसलिये कि हर एक मुंह बन्द किया जाए, और सारा संसार परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे।

#### Romans 8:7, 8

Because the carnal mind is enmity against God: for it is not subject to the law of God, neither indeed can be. So then they that are in the flesh cannot please God.

7. क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है।8. और जो शारीरिक दशा में है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

#### Colossians 2:13

And you, being dead in your trespasses and the uncircumcision of your flesh, hath he quickened together with him, having forgiven you all trespasses.

13. और उस ने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारिहत दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया।

#### Ephesians 2:1-2, 4-5

And you were dead in the trespasses and sins in which you once walked... But God, being rich in mercy, because of the great love with which he loved us, even when we were dead in our trespasses, made us alive together with Christ—by grace you have been saved.

1. और उस ने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे। 2. जिन में तुम पहिले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है। 4. परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया। 5. जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।)

Mark 10:18

“Why do you call me good?” Jesus answered. “No one is good—except God alone.

यीशु ने उसे उत्तर दिया, “तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? केवल परमेश्वर के सिवा और कोई उत्तम नहीं है।

Romans 11:32

For God has consigned all to disobedience, that he may have mercy on all. (c.f. Galatians 3:22)

32. क्योंकि परमेश्वर ने सब को आज्ञा न मानने के कारण बन्द कर रखा ताकि वह सब पर दया करे॥



Romans 3:23

for all have sinned and fall short of the glory of God  
23. इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।

2 Chronicles 6:36

“there is no one who does not sin”

36. निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है, यदि वे भी तेरे विरुद्ध पाप करें और तू उन पर कोप कर के उन्हें शत्रुओं के हाथ कर दे, और वे उन्हें बन्धुआ कर के किसी देश को, चाहे वह दूर हो, चाहे निकट, ले जाएं,

Mark 7:21-23

“For from within, out of the heart of man, come evil thoughts, sexual immorality, theft, murder, adultery, coveting, wickedness, deceit, sensuality, envy, slander, pride, foolishness. All these evil things come from within, and they defile a person.” (c.f. Matthew 15:19)

21. क्योंकि भीतर से अर्थात् मनुष्य के मन से, बुरी बुरी चिन्ता, व्यभिचार। 22. चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और मूर्खता निकलती हैं। 23. ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं॥

### Ecclesiastes 9:3

Also, the hearts of the children of man are full of evil, and madness is in their hearts while they live, and after that they go to the dead.

जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है उस में यह एक दोष है कि सब लोगों की एक सी दशा होती है; और मनुष्यों के मनों में बुराई भरी हुई है, और जब तक वे जीवित रहते हैं उनके मन में बावलापन रहता है, और उसके बाद वे मरे हुआँ में जा मिलते हैं।

### Ephesians 4:17-18

you must no longer walk as the Gentiles do, in the futility of their minds. They are darkened in their understanding, alienated from the life of God because of the ignorance that is in them, due to their hardness of heart.

17. इसलिये मैं यह कहता हूँ, और प्रभु में जताए देता हूँ कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ की रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो।

18. क्योंकि उनकी बुद्धि अन्धेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं।

### Jeremiah 10:7-8,14

among all the wise ones of the nations and in all their kingdoms there is none like you. They are both stupid and foolish... Every man is stupid and without knowledge.

7. हे सब जातियों के राजा, तुझ से कौन न डरेगा? क्योंकि यह तेरे योग्य है; अन्यजातियों के सारे बुद्धिमानों में, और उनके सारे राज्यों में तेरे समान कोई नहीं है। 8. परन्तु वे पशु सरीखे निरे मूर्ख हैं; मूर्तियों से क्या शिक्षा? वे तो काठ ही हैं!

14. सब मनुष्य पशु सरीखे ज्ञानरहित हैं; अपनी खोदी हुई मूर्तों के कारण सब सुनारों की आशा टूटती है; क्योंकि उनकी ढाली हुई मूर्तें झूठी हैं, और उन में सांस ही नहीं है।

### Titus 3:3

For we ourselves were once foolish, disobedient, led astray, slaves to various passions and pleasures, passing our days in malice and envy, hated by others and hating one another.

क्योंकि हम भी पहिले, निर्बुद्धि, और आज्ञा न मानने वाले, और भ्रम में पड़े हुए, और रंग रंग के अभिलाषाओं और सुखविलास के दासत्व में थे, और बैरभाव, और डाह करने में जीवन निर्वाह करते थे, और घृणित थे, और एक दूसरे से बैर रखते थे।

## Galatians 4:8-9

Formerly, when you did not know God, you were enslaved to those that by nature are not gods. But now that you have come to know God, or rather to be known by God, how can you turn back again to the weak and worthless elementary principles of the world, whose slaves you want to be once more?

8. भला, तक तो तुम परमेश्वर को न जानकर उनके दास थे जो स्वभाव से परमेश्वर नहीं।

9. पर अब जो तुम ने परमेश्वर को पहचान लिया बरन परमेश्वर ने तुम को पहचाना, तो उन निर्बल और निकम्मी आदि-शिझा की बातोंकी ओर क्योंफिरते हो, जिन के तुम दोबारा दास होना चाहते हो

**Romans 6:6,16,17,19,20**

We know that our old self was crucified with him in order that the body of sin might be brought to nothing, so that we would no longer be enslaved to sin. Do you not know that if you present yourselves to anyone as obedient slaves, you are slaves of the one whom you obey...? But thanks be to God, that you who were once slaves of sin have become obedient from the heart to the standard of teaching to which you were committed... For just as you once presented your members as slaves to impurity and to lawlessness leading to more lawlessness, so now present your members as slaves to righteousness leading to sanctification. For when you were slaves of sin, you were free in regard to righteousness.

क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।

16. क्या तुम नहीं जानते, कि जिस की आज्ञा मानने के लिये तुम अपने आप को दासों की नाई सौंप देते हो, उसी के दास हो: और जिस की मानते हो, चाहे पाप के, जिस का अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के, जिस का अन्त धार्मिकता है

17. परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे।

19. मैं तुम्हारी शारीरिक दुर्बलता के कारण मनुष्यों की रीति पर कहता हूं, जैसे तुम ने अपने अंगों को कुकर्म के लिये अशुद्धता और कुकर्म के दास करके सौंपा था, वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्रता के लिये धर्म के दास करके सौंप दो।

20. जब तुम पाप के दास थे, तो धर्म की ओर से स्वतंत्र थे।

## Romans 7:18

For I know that nothing good dwells in me, that is, in my flesh

18. क्योंकि मैं जानता हूं, कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती, इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते।

### 1 Samuel 24:13

“As the proverb of the ancients says, ‘Out of the wicked comes wickedness.’”

13. प्राचीनों के नीति वचन के अनुसार दुष्टता दुष्टों से होती है।

### Matthew 7:18

“A healthy tree cannot bear bad fruit, nor can a diseased tree bear good fruit.” (c.f.

Luke

6:43)

18. देखो, मैं ने पहिले से तुम से यह सब कुछ कह दिया है।

### Matthew 12:34-35

“How can you speak good, when you are evil? For out of the abundance of the heart the mouth speaks. The good person out of his good treasure brings forth good, and the evil person out of his evil treasure brings forth evil.”

34. यह तो “इस्त्राएल का राजा है”। अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास करें। 35. उस ने परमेश्वर का भरोसा रखा है, यदि वह इस को चाहता है, तो अब इसे छोड़ा ले, क्योंकि इस ने कहा था, कि “मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ”।

### Romans 8:7

For the mind that is set on the flesh is hostile to God, for it does not submit to God’s law; indeed, it cannot.

क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है।



### 1 Corinthians 2:14

The natural person does not accept the things of the Spirit of God, for they are folly to him, and he is not able to understand them because they are spiritually discerned.

14. परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उन की जांच आत्मिक रीति से होती है।

## 2 Corinthians 4:3-4

our gospel is veiled... to those who are perishing. In their case the god of this world has blinded the minds of the unbelievers, to keep them from seeing the light of the gospel of the glory of Christ, who is the image of God.

परन्तु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है, तो यह नाश होने वालों ही के लिये पड़ा है। और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।

## John 3:6

“That which is born of the flesh is flesh”

6. क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।

## Hebrews 11:6

And without faith it is impossible to please [God]

6. और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है।

## Romans 8:7-8

<sup>7</sup> The mind governed by the flesh is hostile to God; it does not submit to God's law, nor can it do so. <sup>8</sup> Those who are in the realm of the flesh cannot please God.

7. क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है। 8. और जो शारीरिक दशा में है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

## Deuteronomy 29:2-4

And Moses summoned all Israel and said to them: “You have seen all that the Lord did before your eyes in the land of Egypt, to Pharaoh and to all his servants and to all his land, the great trials that your eyes saw, the signs, and those great wonders. But to this day the Lord has not given you a heart to understand or eyes to see or ears to hear.”

2. फिर मूसा ने सब इस्त्राएलियों को बुलाकर कहा, जो कुछ यहोवा ने मिस्र देश में तुम्हारे देखते फिरौन और उसके सब कर्मचारियों, और उसके सारे देश से किया वह तुम ने देखा है; 3. वे बड़े बड़े परीक्षा के काम, और चिन्ह, और बड़े बड़े चमत्कार तेरी आंखों के साम्हने हुए; 4. परन्तु यहोवा ने आज तक तुम को न तो समझने की बुद्धि, और न देखने की आंखें, और न सुनने के कान दिए हैं।

## John 3:27

John answered, “A person cannot receive even one thing unless it is given him from heaven.”

27. यूहन्ना ने उत्तर दिया, जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए तब तक वह कुछ नहीं पा सकता।

### John 1:12-13

But to all who did receive him, who believed in his name, he gave the right to become children of God, who were born, not of blood nor of the will of the flesh nor of the will of man, but of God.

12. परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। 13. वे न तो लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।

### John 6:44,65

“No one can come to me unless the Father who sent me draws him. And I will raise him up on the last day.” And he said, “This is why I told you that no one can come to me unless it is granted him by the Father.”

44. कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिस ने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले; और मैं उस को अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा।

65. और उस ने कहा, इसी लिये मैं ने तुम से कहा था कि जब तक किसी को पिता की ओर यह वरदान न दिया जाए तक तक वह मेरे पास नहीं आ सकता।

### Romans 9:16

So then it depends not on human will or exertion, but on God, who has mercy.

16. सो यह न तो चाहने वाले की, न दौड़ने वाले की परन्तु दया करने वाले परमेश्वर की बात है।

### Romans 11:35-36

“Or who has given a gift to him that he might be repaid?” For from him and through him and to him are all things.

35. या किस ने पहिले उसे कुछ दिया है जिस का बदला उसे दिया जाए। 36. क्योंकि उस की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिये सब कुछ है: उस की महिमा युगानुयुग होती रहे: आमीन ॥

### 1 Corinthians 1:30

And because of him you are in Christ Jesus

30. परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा।

### Philippians 2:13

for it is God who works in you, both to will and to work for his good pleasure.

13. क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस न अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।

### Eph. 1:4

“just as He chose us in Him before the foundation of the world, that we would be holy and blameless before Him. In love.”

4. जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।

Eph. 1:5

“He predestined us to adoption as sons through Jesus Christ to Himself, according to the kind intention of His will.”

5. और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों,

Eph. 1:11

“also we have obtained an inheritance, having been predestined according to His purpose who works all things after the counsel of His will.”

11. उसी में जिस में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से ठहराए जाकर मीरास बने।

2 Thess. 2:13

“But we should always give thanks to God for you, brethren beloved by the Lord, because God has chosen you from the beginning for salvation through sanctification by the Spirit and faith in the truth.”

13. पर हे भाइयो, और प्रभु के प्रिय लोगो चाहिये कि हम तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, कि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया; कि आत्मा के द्वारा पवित्र बन कर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ।



1 Pet. 1:3

“Blessed be the God and Father of our Lord Jesus Christ, who according to His great mercy has caused us to be born again to a living hope through the resurrection of Jesus Christ from the dead.”

3. हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद दो, जिस ने यीशु मसीह के हुआँ में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया।

Rom. 6:20

“For when you were slaves of sin, you were free in regard to righteousness.”

20. जब तुम पाप के दास थे, तो धर्म की ओर से स्वतंत्र थे।

*Who supplies faith/belief/repentance?*

Acts 16:14

One who heard us was a woman named Lydia, from the city of Thyatira, a seller of purple goods, who was a worshiper of God. The Lord opened her heart to pay attention to what was said by Paul.

14. सब्त के दिन हम नगर के फाटक के बाहर नदी के किनारे यह समझकर गए, कि वहां प्रार्थना करने का स्थान होगा; और बैठकर उन स्त्रियों से जो इकट्ठी हुई थीं, बातें करने लगे।

1 Corinthians 3:6

I planted, Apollos watered, but God gave the growth.

6. मैं ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया।

Acts 5:31

“God exalted him at his right hand as Leader and Savior, to give repentance to Israel and forgiveness of sins.”

31. उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारक ठहराकर, अपने दाहिने हाथ से सर्वोच्च कर दिया, कि वह इस्त्राएलियों को मन फिराव की शक्ति और पापों की क्षमा प्रदान करे।

Acts 11:18

When they heard these things they fell silent. And they glorified God, saying, “Then to the Gentiles also God has granted repentance that leads to life.”

18. यह सुनकर, वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है॥

Philippians 1:29

For it has been granted to you that for the sake of Christ you should... believe in him

29. क्योंकि मसीह के कारण तुम पर यह अनुग्रह हुआ कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उसके लिये दुख भी उठाओ।

Acts 18:27

When he arrived, he greatly helped those who through grace had believed

27. वह आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा, पर प्रिस्किल्ला और अक्विला उस की बातें सुनकर, उसे अपने यहां ले गए और परमेश्वर का मार्ग उस को और भी ठीक ठीक बताया।

### Ephesians 2:8-9

For by grace you have been saved through faith. And this is not your own doing; it is the gift of God, not a result of works, so that no one may boast.

8. क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। 9. और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।

### Romans 12:3

For by the grace given to me I say to everyone among you not to think of himself more highly than he ought to think, but to think with sober judgment, each according to the measure of faith that God has assigned.

3. क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुम में से हर एक से कहता हूँ, कि जैसा समझना चाहिए, उस से बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार बांट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।

### 2 Timothy 2:24-25

And the Lord's servant must not be quarrelsome but kind to everyone, [etc.]... God may perhaps grant them repentance leading to a knowledge of the truth

24. और प्रभु के दास को झगड़ालू होना न चाहिए, पर सब के साथ कोमल और शिक्षा में निपुण, और सहनशील हो। 25. और विरोधियों को नम्रता से समझाए, क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे, कि वे भी सत्य को पहिचानें।

### 1 Corinthians 12:3

no one can say "Jesus is Lord" except in the Holy Spirit.

3. इसलिये मैं तुम्हें चिंतौनी देता हूँ कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा की अगुआई से बोलता है, वह नहीं कहता कि यीशु स्त्रापित है; और न कोई पवित्र आत्मा के बिना कह सकता है कि यीशु प्रभु है॥

### 2 Peter 1:3

His divine power has granted to us all things that pertain to life and godliness, through the knowledge of him who called us to his own glory and excellence

3. क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिस ने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है।

### Romans 11:36

For from him and through him and to him are all things.

36. क्योंकि उस की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिये सब कुछ है: उस की महिमा युगानुयुग होती रहे: आमीन॥

## 1 Corinthians 4:7

For who sees anything different in you? What do you have that you did not receive? If then you received it, why do you boast as if you did not receive it?

7. क्योंकि तुझ में और दूसरे में कौन भेद करता है? और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं पाया: और जब कि तु ने (दूसरे से) पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है, कि मानों नहीं पाया?

## John 3:6

“That which is born of the flesh is flesh, and that which is born of the Spirit is spirit. It is the Spirit who gives life; the flesh is no help at all.”

6. क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।